ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—18/04/2021 मंत्र -प्रेमचंद

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

एन सी ई आर टी पर आधारित

मंत्र

-प्रेमचन्द

मगर उपचेतना ने अब एक-दूसरा रूप धारण किया, जो हिंसा से बहुत कुछ मिलता-जुलता था, वह झाड़-फूँक करने नहीं जा रहा है, वह देखेगा कि लोग क्या कर रहे हैं? डॉक्टर साहब का रोना-पीटना देखेगा कि किस तरह पछाड़े खाते हैं? वह देखेगा कि बड़े लोग भी छोटों की ही भाँति रोते हैं, या सबर भी कर जाते हैं । वे लोग जो विद्वान होते हैं, सबर कर जाते होंगे। हिंसा-भाव को यों धीरज देता हुआ वह फिर आगे बढ़ा।

इतने में दो आदमी आते दिखाई दिए। दोनों बातें करते चले आ रहे थे, “चड्ढ़ा बाबू का घर उजड़ गया, वही तो एक लड़का था। "

भगत के कान में यह आवाज पड़ी। उसकी चाल और भी तेज हो गयी। इस तरह कोई 10 मिनट चला होगा कि डॉक्टर साहब का बँगला नजर आया। सन्नाटा छाया हुआ था। रोने-पीटने की आवाज भी न आती थी। भगत का कलेजा धक् धक् करने
~~~~~~~~~~

लगा। कहीं मुझे बहुत देर तो नहीं हो गयी, वह दौड़ने लगा। अपनी उम्र में वह इतना तेज कभी न दौड़ा था। बस, यही मालूम होता था, मानो उसके पीछे मौत दौड़ी आ रही है।

दो बज गए थे। मेहमान विदा हो गये। रोने वालों में केवल आकाश के तारे रह गए थे और सभी रो-रोकर थक गए थे। बड़ी उत्सुकता के साथ लोग रह-रहकर आकाश की ओर देखते थे कि किसी तरह सुबह हो और लाश गंगा की गोद में दी जाए।

सहसा भगत ने द्वार पर पहुँचकर आवाज दी। डॉक्टर साहब समझे कोई मरीज आया होगा। किसी और दिन वे उस आदमी को दुत्कार देते होंगे मगर आज बाहर निकल आए। देखा, एक बूढ़ा आदमी खड़ा है कमर झुकी हुई, पोपला मुँह, भौंहें तक सफेद हो गयी थीं। लकड़ी के सहारे काँप रहा था। बड़ी नम्रता से बोले, "क्या है भाई? आज तो हमारे ऊपर ऐसी मुसीबत पड़ गयी है कि कुछ कहते नहीं बनता, फिर कभी आना इधर एक महीने तक शायद मैं किसी मरीज को न देख सकूँगा।" भगत ने कहा, "सुन चुका हूँ बाबू जी, इसीलिए आया हूँ। भैया कहाँ है? जरा मुझे दिखा दीजिए। भगवान बड़ा कार्य करने वाला है, मुरदे को जिला सकता है। कौन जाने, अब भी उसे दया आ जाए।"

चड्ढा ने व्यथित स्वर से कहा, "चलो, देख लो, मगर तीन-चार घंटे हो गए। जो कुछ होना था, हो चुका। बहुतेरे झाड़ने-फूँकने वाले देख-देखकर चले गये।" डॉक्टर साहब भगत को अंदर ले गये। उसने लाश को एक मिनट तक देखा। तब मुसकराकर बोला, "अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। बाबू जी! अगर नारायण चाहेंगे, तो आधे घंटे में भैया उठ बैठेंगे। आप नाहक दिल छोटा कर रहे हैं। जरा कहारों से कहिए पानी तो भरें।"

कहारों ने पानी भर-भरकर कैलाश को नहलाना शुरू किया। पाइप बंद हो गया था। कहारों की संख्या अधिक न थी इसलिए मेहमानों ने अहाते के बाहर कुएँ से पानी भर-भरकर कहारों को दिया, मृणालिनी कलसा लिए पानी ला रही थी। बूढ़ा भगत खड़ा मुस्करा- मुस्कराकर मंत्र पढ़ रहा था, मानो विजय उसके सामने खड़ी है। जब एक मंत्र समाप्त हो जाता, तब वह एक जड़ी कैलाश को सुँघा देता। इस तरह न जाने कितने घड़े कैलाश के सिर पर डाले गए और न जाने कितनी बार भगत ने मंत्र फूँका। आखिर जब उषा ने अपनी लाल-लाल आँखें खोली, तो कैलाश की भी लाल-लाल आँखें खुल गयी। एक क्षण में उसने अँगड़ाई ली और पानी पीने को माँगा। मृणालिनी कैलाश के सामने आँखों में आँसू भरे पूछने लगी, “अब कैसी तबियत है?”

एक क्षण में चारों तरफ खबर फैल गयी। मित्रगण मुबारकबाद देने आने लगे। डॉक्टर साहब बड़े श्रद्धा-भाव से हर एक के सामने भगत का यश गाते फिरते थे। सभी लोग भगत के दर्शनों के लिए उत्सुक हो उठे, मगर अंदर जाकर देखा, तो भगत का कहीं पता न था।

यहाँ तो भगत की चारों ओर तलाश होने लगी और भगत लपका हुआ घर चला जा रहा था कि बुढ़िया के उठने के पहले पहुँच जाऊँ।

जब मेहमान लोग चले गये, तो डॉक्टर साहब ने नारायणी से कहा, “बुड्ढ़ा न जाने कहाँ चला गया? एक चिलम तमाखू का भी रवादार न हुआ।"

नारायणी-“मैंने तो सोचा था, इसे कोई बड़ी रकम दूंगी।"

चड्ढ़ा- “रात मैंने नहीं पहचाना पर जरा साफ हो जाने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था। मुझे अब याद आता है कि मैं खेलने जा रहा था और मरीज को देखने से इनकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे खोज निकालूँगा और पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं,

यह जानता हूँ, उसका जन्म यश की वर्षा करने के लिए ही हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवन पर्यंत मेरे सामने रहेगा।

****

छात्र कार्य-

सम्पूर्ण कहानी का उच्च स्वर में वाचन करें एवं प्रण लें , आपसे जहाँ तक संभव हो , असहायों की मदद करेंगे।

धन्यवाद